Dr. Meena Devi. R.M.C.
Dpt of - Psychology
Class — part II (H) 6.5.2020

Ques.1 → What do you mean by mood disorder? Explain in short its different types.
मनोदशा विकृति से आप क्या समझते हैं? इसके विभिन्न प्रकारों की संक्षिप्त व्याख्या करें।

Ans → हर व्यक्ति के जीवन में ऐसी परिस्थिति आती है जिसमें व्यक्ति विक्षुब्ध हो जाता है। मानसिक दशाओं में इतना उतार-चढ़ाव होता है कि अपने दैनिक जीवन में Adjustment करना नामुमकिन होता है। विक्षुब्धता को इन स्थितियों में व्यक्ति Depressed (अवसाद ग्रस्त) रहता है जो व्यक्ति के मनोभाव सम्बन्धी विकार को इंगित करता है, जैसे कोई परीक्षा में फेल हो जाने पर या परिवार में किसी की मृत्यु हो जाने के बाद इसी तरह के अन्य कई कारण हो सकते हैं। इसी विकार से विक्षुब्ध होकर व्यक्ति अन्त में आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाता है।

मनोभाव सम्बन्धी विकृति मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं-
(1) अवसादी (Depressive)
(2) Bipolar (द्विध्रुवीय)
(3) डिस्थाइमिक (Dysthymic)

1. Depressive दो प्रकार के होते हैं
(क) Depressive mood (अवसादी भाव)
(ख) Depressive disorder (अवसादी मनोविकार)

हर व्यक्ति के जीवन में यदा-कदा ऐसी परिस्थिति में आती है जिसमें व्यक्ति विक्षुब्ध हो जाता है पर अगर व्यक्ति इस अवसाद से कुछ समय बाद मुक्त हो जाता है तो इसे "अवसादी भाव" कहते हैं। पर जब व्यक्ति उससे मुक्त न होकर हमेशा दुःखी रहता है, तो खुशियों के क्षण भी उसके दुःखद भाव को परिवर्तित नहीं कर पाते हैं तो इसे "अवसादी मनोविकृति" कहते हैं।

अवसादी मनोविकृति में रोगी में नींद की कमी, भूख कम लगना, हमेशा असंतुष्ट रहना, एकाग्रता की कमी, मृत्यु की इच्छा का बार-2 आना थकान का अनुभव करना इत्यादि।

2 Bipolar → (द्विध्रुवीय मनोदशा विकार)
को उन्माद अवसाद विकार भी कहा जाता है। कभी-2 रोगी में सामान्य अवस्था की भी अवधि आती है इसलिए इसे द्विध्रुवीय मनोदशा विकार कहते हैं। इसके लक्षण इस प्रकार दिखे जाते हैं। किसी से मिलना-जुलना पसंद नहीं आना, उसके खाने और रहने में परिवर्तन एकाग्रता की कमी, खुशी के समय में भी उदास रहना आदि। इन सब लक्षणों के कारण रोगी में आत्महत्या करने का लक्षण सबसे ज्यादा रहता है।

3 Dysthymic (
यह एक मृदुल ढंग का अवसाद है इसमें उन्माद और विषाद के क्षण वैकल्पिक क्रम से उत्पन्न होते हैं। उत्साह के क्षण में व्यक्ति उत्साहित और सक्रिय तथा प्रसन्न रहता है। और विषाद के क्षणों में दुःखी, निष्क्रिय और उत्साहरहित रहता है।
रोगी के सम्मुख ऐसी परिस्थिति नहीं लानी चाहिए जिससे कि वह अधिक उत्साहित हो। रोगी को खाली बैठने नहीं देना चाहिए, उसे हमेशा कुछ काम करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उद्दीप्त अवस्था में रोगी को प्रतिदिन गर्म पानी से स्नान कराना चाहिए। प्रायः पाया गया कि उत्साह-विषाद मनोविकृति से पीड़ित रोगियों में 70% लोग मानसिक चिकित्सालय में भर्ती होने के एक वर्ष के अन्दर ठीक हो जाते हैं। इत्यादि